प्राकृतिक खेती

कम लागत – अधिक लाभ – स्वस्थ मिट्टी – स्वस्थ जीवन

बीजामृत

गौमूत्र	गोबर	पानी	चूना	मिट्टी
5 लीटर	5 किलो	20 लीटर	50 ग्राम	100 ग्राम

बनाने की विधि:- सभी को मिलाकर 24 घंटे छाया में रखें। दिन में दो बार सुबह-शाम बायें से दाहिने भंवर बनते तक लकड़ी से घुमाएं।

बीजशोधन:- इतने बीजामृत से 100 किलो बीज को भिगोकर शोधित करें। शोधित बीज को छाया में सुखा लें, फिर खेत में बोयें। बीजामृत द्वारा शुद्ध हुए बीज जल्दी और ज्यादा मात्रा में उगते हैं। जड़ें तेजी से बढ़ती हैं। पौधे, भूमि द्वारा लगने वाली बीमारियों से बचे रहते हैं एवं अच्छी प्रकार से पलते-बढ़ते हैं।

जीवामृत

गौमूत्र	गोबर	बेसन	मिट्टी	गुड़	पानी
10 लीटर	10 किलो	1-2 किलो	1 किलो	1-2 किलो	200 ली०

बनाने की विधि:- सभी को मिलाकर दिन में दो बार सुबह-शाम बायें से दाहिने भंवर बनते तक लकड़ी से घुमाएं। 48 घंटे बाद छानकर सात दिन में प्रयोग कर लें।

प्रयोग विधि:- एक एकड़ में 200 लीटर पानी के साथ टपकविधि से या धीमें-धीमें बहाये, छिड़काव विधि भी अपना सकते हैं, पहला छिड़काव बुआई के 1 माह बाद, 1 एकड़ में 100 लीटर पानी में 5 लीटर जीवामृत मिलाकर कर दें, दूसरा छिड़काव 21 दिन बाद तक एकड़ में 150 लीटर पानी व 10 लीटर जीवामृत मिलाकर दें, तीसरा और चौथा छिड़काव इसी प्रकार 21-21 दिन बाद एक एकड़ में 200 लीटर पानी में 20 लीटर जीवामृत मिलाकर दें, पांचवा और आखिरी छिड़काव कच्चादाना (दूधदाना) अवस्था में प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में केवल 5-10 लीटर खट्टा छाछ मिलाकर छिड़काव करें।

नीमास्त्र

प्रभावी कीट नियंत्रक:- रस चूसने वाले कीड़े, छोटी सुंडी, इल्लियों को नियंत्रित करता है।

सामग्री:- 5 किलो नीम की पत्ती/नीम की फली, 5 लीटर देशी गाय का गौमूत्र, 1 किलो देशी गाय का गोबर तथा 100 ली० पानी।

बनाने की विधि:- नीम की पत्ती और सूखे फलों को कूटकर पानी में मिलाए। उसमें अब देशी गाय का गोबर और गौमूत्र मिला लें, सभी मिश्रण मिलाकर 48 घंटे बोरे से ढक कर छाया में ही रख दें। इस बीच सुबह-शाम एक-एक बार लकड़ी से बायें से दाहिने भंवर बनने तक घुमाए।

प्रयोग विधि:- तैयार नीमास्त्र को कपड़े से छानकर 1 एकड़ फसल पर छिड़काव करें, नीमास्त्र के छिड़काव से गंध के कारण वन्यजीव / जानवर भी फसल को कम पसन्द करते/ नहीं खाते हैं।

ब्रह्मास्त्र

सामग्री: देशी गाय का गौमूत्र: 10 लीटर, **नीम के पत्ते की चटनी:** 5 किलोग्राम, **धतूरा, पपीता, करंज, सीताफल, अरंडी के पत्ते की चटनी:** 2-3 किलोग्राम

प्रभावी नियंत्रक:- बड़ी सूण्डियों/इल्लियों को नष्ट कर देता है।

बनाने की विधि:- उपरोक्त चटनियों को गौमूत्र में मिलाकर धीमी आँच पर 3-4 उबाल आने तक पकाएं। इस मिश्रण घोल को 48 घंटे तक बोरे से ढककर छाया में रखकर ठंडा करें।

प्रयोग विधि:- 3 लीटर ब्रह्मास्त्र को 100 लीटर पानी में मिलाकर एक एकड़ की फसल पर छिड़काव करें। एक बार बने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग छह माह तक किया जा सकता है, छह माह के बाद इसका प्रभाव कम हो जाता है।

घनजीवामृत

गौमूत्र	गोबर	बेसन	मिट्टी	गुड़
5 लीटर	100 किलो	2 किलो	1 किलो	1 किलो

बनाने की विधि:-उपरोक्त सबको मिलाकर गोबर का हलवा (पेस्ट) बना देते हैं। 48 घंटे छाया में बोरी से ढककर रखें। इसके बाद छाया में ही फैलाकर सुखा लें। सूखने के बाद चूर्ण को बोरी में भर दें। छह माह के अन्दर ही प्रयोग कर लें।

प्रयोग विधि:-घनजीवामृत को बुआई के समय या पानी देने के तीन दिन बाद दिया जाता है। एक एकड़ में एक कुंतल तैयार घनजीवामृत दे सकते हैं।

फफूंद नाशक

बनाने की विधि:- तीन दिन पुरानी खट्टी छाछ / मट्ठा 5 लीटर एकत्र करें। इसमें 200 लीटर पानी को भली-भाँति मिला देवें।

प्रयोग विधि:- 200 लीटर पानी से बना फफूंद नाशक एक एकड़ में छिड़काव के लिए पर्याप्त है। आमतौर पर फसलों में लगने वाले कवकों का उपचार इससे ही किया जा सकता है।

अग्नि अस्त्र

गौमूत्र	नीमपत्ता	तम्बाकू चूर्ण	हरी मिर्च	देशी लहसुन
20 लीटर	5 किलो	1 किलो	500 ग्राम	500 ग्राम

प्रभावी कीट नियंत्रक:- रस चूसने वाले कीड़े, छोटी सुण्डी, इल्लियों को नियंत्रित करता है।

बनाने की विधि:- कूटे हुए नीम के पत्ते व अन्य उपरोक्त सामग्री गौमूत्र में मिलाकर धीमी आंच पर 4-5 उबाल आने तक पकाएं। इस मिश्रण घोल को 48 घंटे तक बोरे से ढक कर छाया में रखो। इस बीच रोज सुबह-शाम एक-एक बार लकड़ी से बाये से दाहिने भंवर बनने तक घुमाएं।

प्रयोग विधि:- तैयार अग्नि अस्त्र को कपड़े से छान लें। 6 से 8 लीटर अग्नि अस्त्र को 200 लीटर पानी में मिलाकर एक एकड़ फसल पर छिड़काव करें। अग्निअस्त्र का प्रयोग 3 माह या उससे पहले तक ही कर सकते हैं। 3 माह के बाद इसका प्रभाव कम हो जाता है।

दशपर्णी अर्क

प्रभावी कीट नियंत्रक:- सभी प्रकार की सुण्डी/इल्लियों को नियंत्रित करता है।

सामग्री:- 200 लीटर पानी, 10 ली० गाय का मूत्र, 2 किलोग्राम देसी गाय का गोबर, नीम/करंज/अरण्डी/सीताफल/गेंदा/तुलसी/धतूरा/आम/मदार/अमरूद/अनार/कड़वा करेला/गुडहल/कनेर/अर्जुन/हल्दी/अदरक/बेहया पवाड़/पपीता आदि में से किन्ही 10 के क्रमश: 2-2 किलोग्राम (कुल 20 किलोग्राम) पत्ते लें। 500 ग्राम हल्दी पाउडर चूर्ण, 500 ग्राम अदरक की चटनी, 10 ग्राम हींग पाउडर चूर्ण, एक किलोग्राम तम्बाकू चूर्ण, एक किलोग्राम हरी मिर्च की चटनी, 500 ग्राम देशी लहसुन की चटनी।

बनाने की विधि:- उपरोक्त सभी सामग्रियों को पानी में मिलाकर लकड़ी से चलाकर अच्छे से घोल लें। इस घोल को बोरी से ढककर छाया में 30-40 दिनों तक रखें। इस बीच प्रतिदिन सुबह-शाम एक-एक बार लकड़ी से बायें से दाहिने भंवर बनने तक चलाएं अंत में कपड़े से छानकर भण्डारण कर लें।

प्रयोग विधि:- 6 लीटर दशपर्णी अर्क 200 लीटर पानी में अच्छी तरह से मिलाकर एक एकड़ की फसल में छिड़काव करें। इस प्रकार एक बार बना दशपर्णी अर्क को छह महीने से पहले तक प्रयोग कर सकते हैं।

संकलन : डा0 नीरज कुमार वैश्य (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान), डा0 बृजेश पाण्डेय

कृषि विज्ञान केन्द्र, गुमला

विकास भारती बिशुनपुर, झारखण्ड-835231

www.gumla.kvk4.in, E-mail : kvk.gumla@gmail.com, Phone No. 06523297004, 6523796345

भा.कृ.अनु.प.-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान जोन-4 पटना, प्राकृतिक खेती विस्तार परियोजनान्तर्गत